ज्योति के आइडिया से समूह को मिलती है व्यापार की समझ

मास्टर एमइसी के रूप में मिली है एक नयी पहचान

नये बिजनेस प्लान से बेहतर आय अर्जित कराना है उद्देश्य

शिकोह अलबदर

उनके चेहरे पर मुस्कान है, आंखों में चमक है. कुछ नया कर गुजरने की चाहत साफ झलकती है. उन्होंने किसी उच्च संस्थान से ना तो एमबीए कोई डिग्री ली है और ना ही किसी कंपनी में मैनेजर है लेकिन जब वो मार्केटिंग, फाईनान्स, एडवरटाइजिंग, ऑपरेशन, रिस्क मैनेजमेंट आदि पर चर्चा करते हुए व्यापार करने के तौर-तरीकों पर बात करती हैं और इसके सभी पहलुओं पर अपनी समझ दरसाती हैं तो आप आश्चर्यचकित हो जायेंगे. यूं तो वह रामलखन कॉलेज से क्षेत्रीय भाषा नागपुरी में स्नातक कर रहीं हैं लेकिन उनमें एक बेहतरीन मैनेजर और मार्केटिंग कंसल्टेंट के गुण लबरेज हैं. जी हां, यह हैं रांची जिला के अनगड़ा प्रखंड के गेतलसूद की ज्योति. ज्योति महिला सशक्तिकरण का एक बेहतरीन उदाहरण पेश करती हैं.

मास्टर एमइसी सर्टिफिकेट प्राप्त करने के लिए आये विभिन्न जिलों से माइक्रो इंटरप्राइज कंसल्टेंट. (फाइल फोटो)

महिलाओं को संगठित कर बनाया समूह

ज्योति वर्तमान में झारखंड राज्य आजीविका प्रमोशन सोसाइटी से जुड़ कर माइक्रो इंटरप्राइज कंसल्टेंट के रूप में काम कर रही हैं. बातचीत के दौरान वह बताती हैं कि मास्टर एमइसी बनने तक के सफर की शुरुआत आजीविका के माध्यम से महिला समूह बनाने से हुई थी. वर्ष 2013 में उन्होंने महिलाओं को संगठित कर समूह चलाने की बात रखी और महिलाओं को समूह से जुड़ कर बचत कर अपनी आर्थिक स्थिति में सुधार लाने के लिए प्रोत्साहित किया. प्रारंभ में तो महिलाओं ने इस पर कोई प्रतिक्रिया नहीं दी लेकिन धीरे-धीरे महिलाओं को लगा कि यह संभवतः उनके लिए कारगर सिद्ध हो. इस तरह से ज्योति महिला समिति का गठन किया गया. समूह की महिलाओं ने ज्योति को पढ़ी-लिखी होने के कारण पुस्तक संचालन का काम सौंपा. ज्योति बताती हैं कि पहले बचत कैसे करेंगे इस पर जानकारी दी गयी और किस प्रकार बचत के पैसों का जरूरत के समय में इस्तेमाल किया जा सकेगा. सभी महिलाओं ने बैठक कर यह निर्धारित किया कि सप्ताह में प्रत्येक मंगलवार को एक घंटे का बैठक किया जायेगा और समूह के कामकाज पर चर्चा की जायेगी. इस पर सभी राजी हो गये. ज्योति कहती हैं : सभी महिलाएं चाहती थी कि बचत करें लेकिन यह बचत कैसे और कहां किया जाये इसके बारे में उन्हें कोई जानकारी पहले नहीं थी. लेकिन समूह बनने के बाद प्रत्येक महिला को लगा कि समूह में बचत करना लाभदायक है. कारण कि जब चाहे पैसा निकाल सकते हैं. महिलाओं ने पहले 10 रुपया बचत करना प्रारंभ किया लेकिन बाद में सभी ने 20 रुपया बचत करना शुरू किया. समूह की बचत और वित्तीय सहायता से समूह की महिलाओं ने लाभ उठाया. ज्योति बताती हैं कि समूह के पैसे से ही एक महिला का इलाज कर जान बचाया जा सका. समूह से महिलाओं को काफी मदद मिली. इस गांव की अधिकांश महिलाएं मछली व्यापार कर अपनी जीविका अर्जित कर रही हैं. गांव के पास ही डैम है जहां से मछली लाया जाता है. ज्योति कहती हैं : गेतलसूद डैम यहां की महिलाओं के लिए रोजगार का बड़ा साधन है. इस गांव में अधिकांश महिलाएं मछली विक्रेता हैं. समूह की महिलाओं नेअधिक मछली की खरीद के लिए समूह से पैसे लिये. महिलाओं ने मछली व्यापार के साथ-साथ नाव बनाने के लिए भी पैसा लिये. ज्योति से यह सवाल किये जाने पर कि समूह से उन्हें व्यक्तिगत क्या लाभ मिला है वह हंसती हैं और कहती हैं : सिलाई मशीन खरीदा है. कपड़ा सिलाई का काम करते हैं. इससे उन्हें अच्छी आय अर्जित करने में मदद मिल रही है. सिलाई कढ़ाई सीखे होने के कारण ज्योति गांव की बच्चियों को सिलाई का प्रशिक्षण भी दे रही हैं.

मास्टर एमइसी के रूप चयन उपलब्धि

ज्योति से झारखंड राज्य आजीविका प्रमोशन सोसाइटी की ओर से माइक्रो इंटरप्राइज कंसल्टेंट का प्रशिक्षण प्राप्त कराने के अनुभवों के विषय पुछे जाने पर उनमें आत्मविश्वास का संचार और अधिक हो जाता है. गांवों में समूहों को बिजनेस प्लान देने की जिम्मेदारी उन्हें ही सौंपी गयी है. ज्योति समूह की महिलाओं को यह बता पाने में सक्षम है कि किस कारोबार के लिए कितना पैसा लगाना होगा, बाजार कहां खोजना होगा, वित्तीय सहायता कैसे और कहां मिलेगी. व्यापार की सभी जरूरी पहलुओं की जानकारी ज्योति समूह की महिलाओं को दे रही हैं. अब ज्योति को आशा है कि वह समूह की महिलाओं को बिजनेस प्लान देकर और उसे प्रभावी तरीके से अमल में ला कर सदस्यों की और अधिक मदद कर सकेंगी. वह कहती हैं : अब समूह को व्यापार करने की अधिक जानकारी हो सकेगी. पहले तो व्यापार के विषय में कुछ नहीं जानते थे. एमइसी प्रशिक्षण मिला तो जाना कि कैसे व्यापार किया जा सकता है. किस व्यापार को किस जगह पर करना है और कितना मात्रा में कहां पर बेचा जाना है. ज्योति बताती हैं कि एमइसी के चयन के लिए आठ चरणों में नॉलेज एंड एक्टिविटी बेस्ड परीक्षा ली गयी थी. इसमें पचहत्तर उम्मीदवार का चयन हुआ था. एक परीक्षा और आयोजित की गयी थी जिसमें पैंतीस मास्टर एमइसी का चयन हुआ और वह उनमें से एक थीं. मास्टर एमइसी में चयन और केरल यात्रा उनकी एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है. आज ज्योति जूनियर एमइसी को प्रशिक्षण देने का काम भी कर रही हैं. ज्योति मास्टर एमइसी के रूप में सक्रिय भूमिका निभाते हुए समूह की महिलाओं को अच्छे बिजनेस प्लान देने की योजना रखती है. सुकर तथा बकरीपालन, मछली व्यापार, सब्जी उगाने वाली महिला किसानों के लिए उन्होंने योजनाएं बनायी हैं. उन्हें खुशी है कि अब उनकी एक नयी सामाजिक पहचान है और एक नयी भूमिका के साथ वह तमाम जिम्मेदारियों के निर्वाह के लिए तत्पर नजर आती हैं.

केरल यात्रा का अनुभव कारगर

माइक्रो इंटरप्राइज कंसल्टेंट के प्रशिक्षण के बाद इक्सपोजर विजिट के लिए केरल भ्रमण के लिए चयनित किया जाना ज्योति के लिए सबसे सुखद क्षण था. ज्योति बताती हैं कि केरल में महिला समूह विभिन्न तरह के उद्योग कर अच्छी आय अर्जित कर रही हैं. प्रिंटिंग प्रेस, कृषि, काजू उत्पादन, रेडिमेड कपड़ों की दुकान आदि महिला समूह चला रही हैं. ज्योति की इच्छा है कि झारखंड में भी महिलाएं इसी तरह काम करें. उनकी नजर में महिलाओं के लिए यहां भी कई लघु उद्योग स्थापित करने के अवसर है. वह कहती हैं : सरसों और करंज का तेल निकाला जा सकता है, राज्य में कटहल और इमली का उत्पादन अधिक है, इसका निर्यात दूसरे राज्य में किया जा सकता है. महिलाएं समूह बनाकर सब्जी और मशरूम उत्पादन कर इसका निर्यात कर सकती हैं. महिलाओं की सोच को बदलना होगा और उन्हें अधिक संगठित करने की जरूरत है. ज्योति भविष्य में अपना निजी कारोबार करना चाहती हैं. वह सिलाई-कढ़ाई के साथ ब्यूटीशियन का काम भी जानती हैं. इसके लिए उन्होंने स्वयं के लिए भी एमइसी प्लान बनाया है. वह कहती हैं : अब स्वयं मार्केट बनाना जान गये हैं, इससे कारोबार बढ़ाने में आसानी होगी. और एमइसी के रूप में दूसरों को व्यवसाय के संबंध में सलाह देंगे तो खुद के व्यवसाय का उदाहरण देते हुए सलाह देंगे तो लोग इस बारे में अधिक अच्छे से समझ सकेंगे. केरल की यात्रा से ज्योति को जो अनुभव प्राप्त हुआ है वह इस अनुभव को आने वाले दिनों में महिला समूहों को आर्थिक रूप से मजबूत करने में इस्तेमाल करेंगी. उनका मानना है कि केरल में महिलाएं अधिक पढ़ी-लिखी हैं. यदि इस यहां भी समूह की महिलाएं पढ़ी हों तो और तरक्की हो सकती है.

सुकुमार सेन देश के पहले मुख्य चुनाव आयुक्त थे. वीएस रमादेवी अबतक इस महत्वपूर्ण पद पर रहने वाली एक मात्र महिला हैं. 1990 में जब टीएन शेषण देश के मुख्य चुनाव आयुक्त बने तो यह पद काफी चर्चा में आया. शेषण ने चुनाव के लिए कई सुधारवादी कदम उठाया.